अपरदन और अपरदन की संकल्पना

अपरदन

अनाच्छादन की सम्पूर्णता में अपरदन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भू तल पर विविध प्रकार से एकत्रित रोड़ी पदार्थ या पदार्थों का ढेर निस्तर गतिशील शाक्तियों द्वारा काट छाँटकर अन्यत्र बहाया या परिवाहित किया जाता है।

फिर भी अपक्षय द्वारा एकत्रित पदार्थ अन्तत गतिशील शाक्तियों अर्थात नदी हिमानी हवा आदि द्वारा अपरदन एवं परिवहन (बहाव) द्वारा अन्य प्राकृतिक दशाओं के अनुसार अन्य भागों में ले जाकर जमा निपेक्षित कर दिया। इस ही तकनीकी दृष्टि से अपरदन कहते है।

अपरदन के लिए कई गतिशील शक्तियां जिम्मेदार है। इनके प्रमुख कारक या अभिकर्ताओं (Agents) नदियाँ भूमिगत जल हवा या पवन हिमानी एवं समुद्र तटीय लहरें आदि है।

इनके द्वारा अपरदित पदार्थों का परिवहन अनेक प्रकार से होता है। कुछ पदार्थ घिसते हुए बहते है कुछ पानी व हवा में घुलते रहते है। कुछ रगड़ खा खाकर पेंदे की रेत की भाँति बहते है। किन्तु भारी चट्टानें पानी में ढाल के साथ लुढ़कती जाती है।

अपरदन के रूप → अपरदन की क्रिया चट्टानों में विविध प्रकार के प्रभाव डालती है।

अपघर्षण →

जब अपरदन के कारण (नदी हवा हिमानी आदि) तो ऐसे पदार्थ से रगड़ खा खाकर बहते जाते है। इसे ही अपघर्षण कहते है।

सान्निघर्षण

इसमे हवा नदी एंव लहरो द्वारा विशेष रूप से बहते गये पदार्थ आपस मे टकराकर रगड़ खा खाकर टुकड़े टुकड़े अथवा चूरे मे बदलते है।

~~जलदाब~~ जलदाब क्रिया –

यह जल की भौतिक क्रिया है। अर्थात यह क्रिया केवल नदी द्वारा सम्भव है। जैसे कि भँवर की या तेल दाबपुर्ण बहाव की क्रिया से अथवा लहरो का शुफाओं मे फँसकर छोटे छोटे छिद्रो द्वारा तेज दबाव से बस बाहर निकलते समय चट्टानो के छेद को बडा करने जैसी क्रिया इसके प्रमुख उदाहरण है

विलियम मोरिस डेविस द्वारा अपरदन चक्र की व्याख्या

डेविस ने विश्व के सभी भागों एवं विविध प्रकार के धरातल तथा विविध जलवायु की दशाओं में विकसित भू आकृतियों का वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उसने धरातल भू आकृतियों के विकास में चक्रीय व्यवस्था या अपरदन चक्र की अवस्थानुसार विकास की विचार धारा को विस्तार से समझाया। इसे उन्होंने भौगोलिक चक्र भी कहा है। भौगोलिक चक्र की संकल्पना का प्रतिपादन सन् 1884 में मिमा डेविस ने इसे स्पष्ट करके आगे बताया कि अपरदन चक्र या भौगोलिक चक्र समय की वह अवधि है। जिसमें क्षेत्र अन्तिम स्थिति या अवस्था में समतल प्राय: मैदान में बदल जाता है।

किसी भी क्षेत्र के अपरदन के प्रकार एवं उसकी व्यवस्था पर वहाँ पाई जाने वाली चट्टानों की संरचना उन पर विशेष प्रक्रिया का जलवायु की क्षेत्रवार बदलती हुई स्थिति के अनुसार प्रभाव एवं ऐसी विशेष प्रक्रिया का वहाँ की संरचना को बदलते रहने से विकसित होने वाली आकृतियों को उसने उस क्षेत्र की अवस्था के रूप में दिखाई देने वाला बताया है।

अत: डेविस के अनुसार स्थलाकृति संरचना प्रक्रिया एवं अवस्था का परिणाम है

संरचना → संरचना से अर्थ पृथ्वी की सतह पर पाई जाने वाली चट्टानों की आकृति उसकी बनावट व व्यवस्था एवं उसमें पाये जाने वाले तत्वों की कटान सहने की क्षमता आदि से मुख्यत: है।

JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA

अतः संरचना बलुई या अवसादी मिट्टी जैसी मुलायम एवं आसान कटने वाली से लेकर ग्रेनाइट ग्रेबो व अन्य कठोर चट्टानो की भाँती अपरदन के दृढ़ता से सहने वाली अथवा उनके बीच की कोई भी हो सकती है।

अवसादी या परतदार संरचना →

इसमे समतल प्रायः हल्की झुकी हुई मोड़दार एवं मिश्रित या जटिल वलन व भ्रंश वाली संरचनाएँ एवं उनकी बनावट की सभी व्यवस्थाएँ आ जाती हैं।

कठोर या स्थाई संरचना → इसमे कायान्तरित अथवा समान कठोरता वाली तथा समरूपी संरचनाएँ आती हैं।

ज्वालामुखी संरचना – डेविस ने ज्वालामुखी पर्वत एवं अन्य स्वतन्त्र रूप से ज्वालामुखी क्रिया से बनी व क्षेत्रो मे फैली चट्टानो को अलग से समझाया है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA